# Gandhian Philosophy

M.A.-2nd Semester
Phil CC-07
Date-17/04/2020

Power Point Presentation by
Amrita Singh
Assistant Professor
Department of Philosophy
Purnea College, Purnea

# Unit -2(2) Ends and means

## साध्य और साधन

- साध्य और साधन का विचार मानव जीवन के प्रत्येक आचरण एवम् व्यवहार के निर्धारण तथा मूल्यांकन से संबंधित है।
- धर्म, नैतिकता,जीवन मूल्य एवम् आदर्शों के सन्दर्भ में यह और भी प्रासंगिक हो जाता है।
- गांधी दर्शन में भी यह विचार केंद्रीय स्थान रखता है क्योंकि इस विचार की प्रासंगिकता उनके सत्य एवम् अहिंसा सिद्धांत से घनिष्ठ रूप से संबंधित है।

- 'साध्य' किसी क्रिया के लक्ष्य या परिणाम का सूचक है।
- 'साधन' वह क्रिया है जिसके द्वारा हम अपने इच्छित लक्ष्य या साध्य को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।
- 'साध्य' लक्ष्य है और 'साधन' उस लक्ष्य की प्राप्ति का ढंग।
- साध्य और साधन के संबंध में सबसे महत्वूर्ण प्रश्न उठता है कि क्या साध्य साधन के औचित्य को सिद्ध करता है या साधन साध्य के औचित्य को सिद्ध करता है?यह दार्शनिकों एवम नीतिशास्त्रियों के बीच बड़ा ही विवाद का प्रश्न है।

- कुछ विचारकों का मत है कि साध्य ही साधनों के औचित्य को सिद्ध करता है(The end justifies the means)। अर्थात् साध्य की पवित्रता साधन को भी पवित्र बना देती है।पवित्र साध्य की प्राप्ति के लिए उचित अनुचित किसी भी साधन का प्रयोग किया जा सकता है।
- इसके विपरीत गांधी जी का मत है कि साधन ही साध्य के औचित्य को सिद्ध करता है (The means justifies the end)।पवित्र साध्य की प्राप्ति के लिए पवित्र साधन का होना आवश्यक है।
- गांधी जी के अनुसार साधन और साध्य में अटूट

संबंध है।दोनों को एक दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता है।

- उनका मत है कि साधन से ही साध्य का विकास होता है।साध्य का निर्माण साधनों द्वारा  होता है।साधन ही सब कुछ है।
- उनके अनुसार,"अगर कोई व्यक्ति साधनों का ख्याल रखता है तो उद्देश्य स्वयं अपना ध्यान रखेंगे।"
- इस प्रकार गांधी जी साधन की पवित्रता पर अधिक बल देते हैं।
- उनके विचार में साध्य, साधनों की अंतिम कड़ी या सीढ़ी का नाम है।

- गांधी जी का मत है कि साध्य और साधन में भेद करने से किसी कार्य कि सावयवी एकता समाप्त हो जाती है।
- साधन  और साध्य की उपमा बीज और वृक्ष से करते हुए वे कहते है,"साधन एक बीज की तरह है और साध्य एक वृक्ष की तरह।साधन और साध्य में वही अटल संबंध है जो बीज और वृक्ष में है।"
- जिस प्रकार बीज में वृक्ष की संभावना अव्यक्त रूप से छिपी रहती है उसी प्रकार साधन में साध्य की संभावना अव्यक्त रूप में छिपी रहती है।

Thank You